

खाटू श्याम चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरण ध्यान धर, सुमिरि सच्चिदानन्द।
श्याम चालीसा भणत हूँ, रच चौपाई छंद॥

चौपाई 1

श्याम श्याम भजि बारम्बारा।
सहज ही हो भवसागर पारा॥

चौपाई 2

इन सम देव न दूजा कोई।
दीन दयालु न दाता कोई॥

चौपाई 3

भीमसुपुत्र अहिलवती जाया।
कहीं भीम का पौत्र कहाया॥

चौपाई 4

यह सब कथा सही कल्पान्तर।
तनिक न मानों इसमें अन्तर॥

चौपाई 5

बर्बरीक विष्णु अवतारा।
भक्तन हेतु मनुज तनु धारा॥

चौपाई 6

वसुदेव देवकी प्यारे।
यशुमति मैया नन्द दुलारे॥

चौपाई 7

मधुसूदन गोपाल मुरारी।
बृजकिशोर गोवर्धन धारी॥

चौपाई 8

सियाराम श्री हरि गोविन्दा।
दीनपाल श्री बाल मुकन्दा॥

चौपाई 9

दामोदर रणछोड़ बिहारी।
नाथ द्वारिकाधीश खरारी॥

चौपाई 10

नरहरि रूप प्रहलाद प्यारा।
खम्भ फारि हिरनाकुश मारा॥

चौपाई 11

राधा वल्लभ रुक्मिणी कंता।
गोपी वल्लभ कंस हनंता॥

चौपाई 12

मनमोहन चित्तचोर कहाये।
माखन चोरि चोरि कर खाये॥

चौपाई 13

मुरलीधर यदुपति घनश्याम।
कृष्ण पतितपावन अभिरामा॥

चौपाई 14

मायापति लक्ष्मीपति ईसा।
पुरुषोत्तम केशव जगदीशा॥

चौपाई 15

विश्वपति त्रिभुवन उजियारा।
दीन बन्धु भक्तन रखवारा॥

चौपाई 16

प्रभु का भेद कोई न पाया।
शेष महेश थके मुनिराया॥

चौपाई 17

नारद शारद ऋषि योगिन्दर।
श्याम श्याम सब रटत निरन्तर॥

चौपाई 18

कवि कोविद करि सके न गिनन्ता।
नाम अपार अथाह अनन्ता॥

चौपाई 19

हर सृष्टि हर युग में भाई।
ले अवतार भक्त सुखदाई॥

चौपाई 20

हृदय माँहि करि देखु विचारा।
श्याम भजे तो हो निस्तारा॥

चौपाई 21

कीर पढ़ावत गणिका तारी।
भीलनी की भक्ति बलिहारी॥

चौपाई 22

सती अहिल्या गौतम नारी।
भई श्राप वश शिला दुखारी॥

चौपाई 23

श्याम चरण रज नित लाई।
पहुँची पतिलोक में जाई॥

चौपाई 24

अजामिल अरु सदन कसाई।
नाम प्रताप परम गति पाई॥

चौपाई 25

जाके श्याम नाम अधारा।
सुख लहहि दुःख दूर हो सारा॥

चौपाई 26

श्याम सुलोचन है अति सुन्दर।
मोर मुकुट सिर तन पीताम्बर॥

चौपाई 27

गल वैजयन्तिमाल सुहाई।
छवि अनूप भक्तन मन भाई॥

चौपाई 28

श्याम श्याम सुमिरहु दिनराती।
शाम दुपहरि अरु परभाती॥

चौपाई 29

श्याम सारथी जिसके रथ के।
रोड़े दूर होय उस पथ के॥

चौपाई 30

श्याम भक्त न कहीं पर हारा।
भीर परि तब श्याम पुकारा॥

चौपाई 31

रसना श्याम नाम रस पी ले।
जी ले श्याम नाम के हाले॥

चौपाई 32

संसारी सुख भोग मिलेगा।
अन्त श्याम सुख योग मिलेगा॥

चौपाई 33

श्याम प्रभु हैं तन के काले।
मन के गोरे भोले भाले॥

चौपाई 34

श्याम संत भक्तन हितकारी।
रोग दोष अघ नाशै भारी॥

चौपाई 35

प्रेम सहित जे नाम पुकारा।
भक्त लगत श्याम को प्यारा॥

चौपाई 36

खाटू में है मथुरा वासी।
पार ब्रह्म पूरण अविनासी॥

चौपाई 37

सुधा तान भरि मुरली बजाई।
चहुं दिशि नाना जहाँ सुनि पाई॥

चौपाई 38

वृद्ध बाल जेते नारी नर।
मुग्ध भये सुनि वंशी के स्वर॥

चौपाई 39

दौड़ दौड़ पहुँचे सब जाई।
खाटू में जहाँ श्याम कन्हाई॥

चौपाई 40

जिसने श्याम स्वरूप निहारा।
भव भय से पाया छुटकारा॥

समापन दोहा

श्याम सलोने साँवरे, बर्बरीक तनु धार।
इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार॥